International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 5; May 2017; Page No. 281-282

सूफी विचारधारा के प्रभाव का अवलोकन

दीप्ति

सहायक प्रोफेसर अतिथि, इतिहास विभाग, श्री अरबिंदो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

किसी भी सम्प्रदाय का उदय प्रगतिशील तत्वों को समावेश से होता है। और इसके विपरीत जब किसी भी सम्प्रदाय में प्रतिगामी तत्वों का समावेश हो जाता हैं, तो उसे सम्प्रदाय की प्रगति अवरुद्ध हो जाती हैं। समय-समय पर यह सभी सम्प्रदायों में देखने को मिलता रहा हैं। इस्लाम के अन्दर भी धार्मिक उन्माद एवं बढ़ती कट्टरता के कारण इस्लाम का मानवीय चहेरा धुमिल होता जा रहा था। इस्लाम की पहचान खोती जा रही थी। इस खोती हुई पहचान को पुन प्राप्त करने के लिए तथा इस्लाम को मानवहितकारी बनाने के लिए सूफी संत आगे आये।

एक लम्बे समय से पुरानी सड़ी-गली मान्यताओं एवं आड़म्बरों से चिपके रहने के कारण इस्लाम की प्रगति अवरुद्ध हो गई थी। सूफी संतों ने इन आडम्बरों एवं प्रगतिबाधक तत्वों से बचाकर इस्लाम की पुनः प्रगति मार्ग पर अग्रसर कर दिया था। अब इस्लाम का एक नवीन मानवीय चहेरा, जो अन्य धर्मावालम्बियों को भी आपत्ति देने के स्थान पर आकर्षित करता था। कुछ-एक सिलसिलों या सूफी संतों को छोड दे तो शेष सभी ने सहिष्णुता एवं मजहबी एकता पर बल दिया था। ''वे ईश्वर की प्रकृति, सृजन, ईश्वर के साथ मनुष्य के संबंध, आत्मा की प्रकृति आदि के संबंध मे चिंतन-मनन करते थे।'' उनका मत था कि मनुष्य अपने अच्छे-बुरे सभी कर्मों के लिए स्वयं जिम्मेदार है।'' [1] शायद यही कारण है कि इन सूफी संतों का आदर-सम्मान मात्र मुस्लिम- धर्म में ही नहीं अन्य धर्मो के लोग भी उनका उतना ही आदर एवं सम्मान करते थे।

सूफी संतों का प्रभाव सामान्य जनता पर तो पड़ा ही थी तत्कालीन शासक वर्ग भी इन्होंने प्रभावित किया था। इन्ही के प्रभाव में कई बार तत्कालीन मुस्लिम शासक भी कुछ हद तक अपने धर्म एवं सम्प्रदाय से विपरीत धर्म एवं समुदायों के लोगों के साथ भी न्याय करने की कोशिश करते थे।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता हैं, कि इन मुस्लिम शासकों में से जो भी शासक धार्मिक सहिष्णुता के मार्ग पर चल यह उसकी राजनीतिक कारकों से प्रेरित आवश्यकता थी किन्तु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है, कि इसमें सूफ़ी संतों की विचारधारा का भी योगदान था, और तभी मुस्लिम शासकों ने अपने से विपरीत धर्म के लोगों के भी अपनी धार्मिक मान्यताओं एवं आस्थाओं को पूरा करने में कम-से-कम बाधा उत्पन्न नहीं कि और साथ ही यहाँ तक भी देखा गया कि कुछ मुस्लिम शासकों ने हिन्दू त्योहारों को अपने दरबार में दरबारियों को मनाने की इजाजत ही नहीं दी अपितु स्वयं भी इसमें शामिल होते थे, इस तरह शासकों के प्रतिगशील विचारों के उदय में सूफी विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान था इससे इंकार नहीं किया जा सकता है।

कुछ विचाकर मानते हैं की विभिन्न शासकों ने अपने से विपरीत धर्म के लोगों को प्रशासन में स्थान दिया, तो इसका मुख्य कारण प्रशासनिक दक्षता को हासिल करना था, पर यह बात सत्य है, कि कोई भी शासक जब कभी भी निर्णय लेता था, तो वह राजनीतिक कारकों को ही सर्वप्रथम मानता था, लेकिन सूफी संतों का यदि योगदान न होता, और 'समाज में फैले वैमन्स्य एवं असंवाद की स्थिति के यदि समाप्त न किया होता तो, यह सामजस्य एवं संवाद की स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती थी'' [2]

मुल्ले और मौलवी शासकों को अन्य धर्मों के व्यक्तियों को उच्च पदों पर आसीन करने की अधिकतर आलोचना की करते दिखते है।'' [3] किन्तु ऐसा निरन्तर होता रहा तो उसमें सूफी संतों की वैचारिक एवं व्यवहारिक दोनों ही प्रकार की क्रान्ति को उदय कराने का श्रेय दिया जाना चाहिए। इसके चलते ही आगे चलकर अकबर जैसे शासकों को 'सुलह-ए-कूल' की नीति को अमली जामा पहनाने का अनुकूल वातरवरण मिलता है।

इतना ही नहीं सूफी संतों ने शोषण पर आधारित राजनीति व्यवस्था को जनकल्याण पर आधारित राजनीति की और मोड़ने का भी भरसक प्रयास किया। विभिन्न शासकों ने जितने भी जनकल्याण पर आधारित कार्य किये उनपर सूफ़ी की विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव था।

सूफ़ियों द्वारा बनाई गई ख़ानकाह जब निर्मित कि गइ थी वह एक सामान्य स्थल था। किन्तु कुछ ही समयान्तराल में थे सधन आबादी के क्षेत्र तथा व्यापारिक स्थल के रूप में सहायक बन गये, क्योंकि ये व्यापारिक मार्गों के निकट एव व्यापारिक मार्गों पर स्थित थे।

शासक वर्ग सूफ़ियों का सम्मान इसलिए भी करते थे, क्योंकि सूफ़ी संतों का साथ मिलने से शासक को अपनी स्थिति सुदृढ तो होती ही थी उसे वैधता भी मिलती थी। सूफ़ियों ने समाज में सद्भावना एवं सौहाद्यता स्थापित करने की शक्ति निहित थी, जो तत्कालीन जनता में सामाजिक तनाव एवं असन्तोष को कम करने का प्रमुख माध्यम बन गये थे।

सूफ़ियों के द्वारा भिन्न-भिन्न धर्मों के लोगों के बीच सहिष्णुता के पक्ष में दिये गये तर्क, धार्मिक विश्वास के आधार पर भेद-भाव किए बिना सभी के लिए अपनी खानकाहों के दरवाजे खोले रखना सभी के प्रति

मानवतावादी एवं कल्याणकारी रवैय्या, जैन एवं हिन्दू योगियों से सम्पर्क, बोल-चाल की भाषा के साथ ही संगीत एवं संगमों में हिन्दवी भाषा का प्रयोग इन सबों ने दोनों समुदायों के मध्य अधिक मेल जोल का वातावरण तैयार कर दिया।

सूफ़ी संतों को कायदे कानूनों से बाँधा नहीं जा सकता है और न ही रीति-रिवाजों की बेड़ियाँ ही पहनाई जा सकती हैं। सूफी अन्य विचारधाराओं से ज्यादा उर्वरक, ज्यादा गम्भीर, ज्यादा सृजनशील दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने सांस्कृतिक पक्षों के विकास में योगदान दिया यथा कला, नृत्य संगीत चित्रकारिकता, स्थापत्य शिल्प, अलंकरण और ज्योतिष में उनके योगदान को दर किनार नहीं किया जा सकता है। क्योंकि वे सुन्दर आकृतियों और प्रभावशाली स्मारकों के निर्माण के माध्यम बने यथा इस्कान एवं तबरेज जैसे शहरों को सुज्जित करना और शिराज की कला में योगदान देना।

सूफ़ी संतों के द्वारा ढ़ोंगी एव दमनकारी धार्मिक हटधर्मिताओं की कूट आलोचना की गई बौद्धिक उन्नति, सांस्कृतिक सृजनात्मकता को आगे बढ़ाया। ''सूफ़ियों के अनुसार मनुष्य आसीम तौर से पूर्णता योग्य है, कि यह पूर्णता संसार के साथ समन्वय से प्राप्त होती है। और इसके लिए भौतिक एवं आध्यात्मिक संतुलन की आवश्यकता होती है। यह सूफ़ियों में विश्वव्यापकता एवं सामन्जस्यता पाने के लिए जो आदर्श धर्म का पालन करते है उनमें ऊँची चेतना की जागृति के लिए सूफ़ियों की भूमिका के तौर पर संदर्भित करता है।''[4]

सूफ़ी संतो ने जहाँ एशिया के क्षेत्र पर अपना सकारात्मक प्रभाव डाला वही कुछ नकारात्मक प्रभाव की अनदेखी नहीं कि जा सकती हैं। अत्यधिक ''श्रद्धा पर बल देने से तर्कशीलता की अनदेखी हुई तथा सूफी संतों को शक्तो मूर्ति पूजा की हद तक लाकर खड़ा कर दिया। कई वैज्ञानिक नियमों की अवहेलना हुई अंतरिक्ष की गति को प्राकृतिक, ऐच्छिक, और अनैच्छिक में बाट दिया।''[5]

सूफ़ियों के प्रभाव से चमत्कारों को प्रोत्साहन किस विज्ञान एवं वैज्ञानिकता का संदेह उत्पन्न हुआ।

संदर्भ

1. Habib. मध्यकालीन भारत और Valunu. Delhi. Rahkamal
2. Verma H.C. Ed. मध्यकालीन भारत भाग 1, 2 New, Delhi : Hindi Madhya Nideshaliya (University of Delhi) 2003 (Reprint)
3. Chanelra.s History of Medival India. (800-1700) Delhi Orient. Lonyman
4. Shah inderege – The Subhis
5. Chand History of Indian and (800-400) Orient Longman